IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंडित वेद सूरी कृत संगीत मकरंद : नृत्याध्याय का स्वरूप एवं कथक के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी : हर्षिता शर्मा

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र पंडित वेद सूरी कृत 'संगीत मकरंद' का परिचय, ऐतिहासिक संदर्भ, पांडुलिपियों तथा विशेषतः नृत्याध्याय की प्रासंगिकता का प्रारम्भिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें नारद कृत 'संगीत मकरंद' से इसकी स्वतंत्र पहचान, पुष्पांजलि प्रकरण तथा नृत्य के संदर्भ में इस ग्रंथ के महत्त्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उपलब्ध दो पूर्ण पांडुलिपियों के आधार पर पाठ एवं विषयवस्तु को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य भारतीय नृत्य परम्परा, विशेषतः कथक के संदर्भ में 'संगीत मकरंद' के महत्त्व को रेखांकित करना तथा इसके नृत्याध्याय के विस्तृत अध्ययन की आधारभूमि तैयार करना है।

प्रमुख शब्द

संगीत मकरंद; वेद सूरी; नृत्याध्याय; पुष्पांजलि; पांडुलिपि; कथक

प्रस्तावना

यद्यपि नारद द्वारा रचित संगीत मकरंद पर पर्याप्त विद्वत्परक अध्ययन उपलब्ध हैं, तथापि पंडित वेद सूरी द्वारा विरचित संगीत मकरंद, विशेषतः उसके नृत्याध्याय, पर स्वतंत्र एवं समालोचनात्मक अध्ययन अत्यन्त सीमित हैं। संगीत-जगत में नारदकृत संगीत मकरंद सदैव से प्रचलित एवं सुप्रसिद्ध ग्रंथ रहा है, किंतु अपेक्षाकृत कम चर्चित तथ्य यह है कि संगीत मकरंद नाम से ही पंडित वेद सूरी द्वारा भी एक अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रंथ की रचना की गई है। यह ग्रंथ भारतीय संगीतशास्त्र के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखता है, क्योंकि इसमें केवल किसी एक का नहीं, अपितु गायन, वादन एवं नृत्य—तीनों कलाओं का विस्तृत एवं क्रमबद्ध निरूपण प्राप्त होता है। विशेषतः इसका नृत्याध्याय तत्कालीन नृत्य-परम्परा, उसके सैद्धान्तिक आधार तथा व्यावहारिक स्वरूप के अध्ययन हेतु एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रामाणिक स्रोत है। इसके बावजूद, विशेष रूप से कथक नृत्य के परिप्रेक्ष्य में इस ग्रंथ का व्यवस्थित विश्लेषण अभी तक नहीं किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध का उद्देश्य संगीत मकरंद के नृत्याध्याय का समीक्षात्मक अध्ययन करते हुए उसके नृत्यशास्त्रीय स्वरूप, ऐतिहासिक महत्त्व तथा कथक नृत्य के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। इस प्रकार यह अध्ययन भारतीय नृत्यशास्त्र तथा कथक की शास्त्रीय परम्परा के अध्ययन में एक महत्त्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करने का प्रयास है।

वेद सूरी कृत संगीत मकरंद का प्रमाण

पंडित वेद सूरी द्वारा रचित इस संगीत मकरंद के अस्तित्व का उल्लेख मंगेश रामकृष्ण तैलंग द्वारा संपादित Sangīta-Makaranda of Nārada (1920) के Introduction में भी प्राप्त होता है। लेखक स्पष्ट रूप से लिखते हैं—"Another work of this name Sangita Makaranda by Veda is mentioned in the list of works on music appended to this book. But as the name of the author is Veda and not Narad, it is likely that it might be different from the present work," इस प्रकार, लेखक के नाम के आधार पर तैलंग इस ग्रंथ को नारद कृत वर्तमान Sangīta-Makaranda से भिन्न मानने की संभावना व्यक्त करते हैं, जिससे पंडित वेद सूरी कृत संगीत मकरंद के स्वतंत्र ग्रंथ के रूप में विद्यमान होने की पुष्टि होती है।

संगीत मकरंद : ग्रंथ का परिचय

वेद द्वारा रचित संगीत मकरंद की पाण्डुलिपि का विवरण Ms. No. B. 6622/D. 10724, Saraswati Mahal Library, Tanjore के रूप में दिया गया है। श्री के. वासुदेव शास्त्री द्वारा इस ग्रंथ पर महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। इसके पुष्पांजलि प्रकरण का संपादन एवं अनुवाद उन्होंने "Nritya Pushpanjali of Veda Suri" नाम से किया, जिसे Darpana Publication द्वारा वर्ष 1965 में प्रकाशित किया गया। इस संस्करण में उन्होंने पुष्पांजलि प्रकरण का अंग्रेज़ी एवं तमिल में अनुवाद प्रस्तुत करने के साथ-साथ अपनी टिप्पणियाँ भी दी हैं। इसके अतिरिक्त, पुष्पांजलि प्रकरण के पश्चात् प्रारम्भ होने वाले नृत्याध्याय के प्रारम्भिक 213 श्लोकों का भी श्री के. वासुदेव शास्त्री द्वारा अंग्रेज़ी में अनुवाद किया गया, जो The Journal of the Tanjore Sarasvati Mahal Library के विभिन्न वॉल्यूम्स में 1946 से 1958 के मध्य प्रकाशित हुआ।

के. वासुदेव शास्त्री द्वारा संपादित Sangita Makaranda Nrityadhyaya (by Veda) की भूमिका के अनुसार, संगीत मकरंद वेद नामक नाट्याचार्य द्वारा रचित नाट्य-ग्रंथ (Manual of Natya) है। वेद शाहजी राजा के दरबार से संबद्ध नाट्याचार्य थे। भूमिका में शाहजी राजा को शिवाजी के पिता के रूप में उल्लिखित किया गया है। यह ग्रंथ विशेष रूप से शम्भु, जो शिवाजी के भाई थे, के लाभ के लिए लिखा गया था। उस समय शम्भु को स्वयं वेद द्वारा नृत्य-कला की शिक्षा दी जा रही थी।

ग्रंथ की प्रस्तुति-पद्धति इसकी विशेषताओं में से एक है। इसमें नाट्य-विषय को एक क्रमिक पाठ्यक्रम (course of lessons) के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा इसे अनेक नियमों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक नियम में प्रयुक्त तकनीकी संज्ञाओं (technical terms) की व्याख्या उसी नियम के साथ तत्काल की गई है। इस प्रकार यह ग्रंथ नृत्य के नियमित विद्यार्थी के लिए ही नहीं, बल्कि नृत्य-कला के पारखी अथवा रसिक के लिए भी उपयोगी है, जो इसकी सहायता से किसी भी प्रदर्शन में कला की तकनीक को आसानी से समझ और उसका अनुसरण कर सकता है।

ग्रंथ के अंत में लेखक ने अपने आश्रयदाता शाहजी महाराज की वंशावली का उल्लेख किया है। शाहजी के पिता का नाम मालोजी अथवा मल्लारिभूपाल तथा माता का नाम उमा था। उमा के एक छोटे पुत्र का नाम सरफोजी बताया गया है। स्वर्गीय श्री संबमूर्ति राव द्वारा अभिलेखों तथा मराठी भाषा में उपलब्ध स्रोतों के आधार पर संकलित "The History of the Mahratta Kings of Tanjore" में शाहजी, जो महान शिवाजी के पिता थे, की वंशावली का उल्लेख मिलता है। इसमें शाहजी की पत्नी जीजाबाई तथा उनके पुत्रों शम्भु और शिवाजी के नामों का भी उल्लेख किया गया है । इन तथ्यों से हमारे ग्रंथकार के आश्रयदाता की पहचान करने में सहायता मिलती है। भूमिका में शम्भु के जन्म का समय शक संवत् 1547 (1625 ई.) बताया गया है। ग्रंथ शम्भु के लाभ के लिए लगभग 1610 ई. में लिखा गया था। वेद सूरी ने अपने ग्रंथ में यह भी उल्लेख किया है कि चूँकि शाहजी को 'मकरंद भूपति' के नाम से भी संबोधित किया जाता है, अतः इसी कारण इस ग्रंथ का नाम 'संगीत मकरंद' रखा गया। इस प्रकार ग्रंथ की रचना-तिथि एवं शम्भु से इसके संबंध का विवरण ग्रंथ के काल-निर्धारण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

उपलब्ध भूमिका के आधार पर संगीत मकरंद वेद नामक नृत्याचार्य द्वारा रचित ऐसा संगीत-ग्रंथ है, जिसकी रचना शम्भु के नृत्य-प्रशिक्षण को ध्यान में रखकर की गई थी। इसकी विशिष्टता नृत्य-विषय को क्रमबद्ध नियमों एवं प्रत्येक नियम के साथ दी गई तकनीकी संज्ञाओं की व्याख्या के रूप में प्रस्तुत करने में निहित है। इस दृष्टि से यह ग्रंथ नाट्य की तत्कालीन सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक परम्परा के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।

अतः नृत्य के विषय पर लिखे गए ग्रंथों में संगीत मकरंद को वर्तमान कथक के सबसे निकट ग्रंथ माना जाता है। ग्रंथकार ने स्वयं अपने गुरु के रूप में अनंत का उल्लेख किया है, जो प्रख्यात संगीतशास्त्री चतुर दामोदर के पुत्र थे। वेदसूरी ने अपने ग्रंथ में देवेन्द्राचार्य विरचित संगीत मुक्तावली तथा चतुर दामोदर विरचित संगीत दर्पण का भी उल्लेख किया है। इससे स्पष्ट होता है कि उन्होंने पूर्ववर्ती संगीत शास्त्रीय परम्परा का गंभीर अध्ययन कर अपने ग्रंथ की रचना की तथा वे चतुर दामोदर की विद्या-परम्परा से संबद्ध थे।

ग्रंथ की भाषा एवं विशिष्टता

पंडित वेद सूरी द्वारा रचित संगीत मकरंद की भाषा मूल रूप से संस्कृत है। इस ग्रंथ में वर्णित विवरण के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि यह ग्रंथ तत्कालीन कथक नृत्य-विषयक जानकारी प्रदान करता है। इसका प्रमुख कारण उस काल में उत्तर भारत में कथक नृत्य का प्रचलन एवं प्रचार है। संगीत मकरंद में पंडित वेद सूरी ने परवर्ती आचार्यों द्वारा वर्णित हस्त-मुद्राओं, स्थानक, अभिनय-भेद आदि की संक्षिप्त चर्चा करते हुए, अपने वर्तमान समय में प्रचलित नृत्य-परंपराओं पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। इसी आधार पर उन्होंने इस ग्रंथ की रचना की है।

इस ग्रंथ की एक विशेषता यह है कि नृत्य-विषयक सामग्री को क्रमबद्ध नियमों (Rules) के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा प्रत्येक नियम के उपरान्त उससे संबंधित पारिभाषिक शब्दों का स्पष्टीकरण भी दिया गया है। इस प्रकार यह ग्रंथ केवल नृत्य के विद्यार्थियों के लिए ही नहीं, अपितु नृत्याचार्यों, शोधकर्ताओं तथा कला-रसिकों के लिए भी समान रूप से उपयोगी सिद्ध होता है।

ग्रंथ की विषयवस्तु

संगीत मकरंद के नृत्याध्याय को प्रारम्भ करने से पूर्व पंडित वेदसूरी ने 'पुष्पांजलि प्रकरण' नामक एक स्वतंत्र प्रकरण प्रस्तुत किया है, जिसमें कुल ३८८ श्लोक हैं। इस प्रकरण में नृत्य एवं नाट्य के आरम्भ में सम्पन्न होने वाली पुष्पार्चना तथा उससे संबंधित नृत्यगतियों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। श्लोकों की संख्या एवं विषय-विस्तार से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पंडित वेदसूरी ने पुष्पांजलि के विधान एवं उससे संबंधित नृत्यगतियों का अत्यंत विस्तारपूर्वक निरूपण किया है। के. वासुदेव शास्त्री ने इसकी तुलना दक्षिण भारतीय नृत्य-परम्परा के अलारिप्पु (Alarippu) से की है। उनके अनुसार, यद्यपि इन गतियों का व्यावहारिक ज्ञान नृत्याचार्यों में सुरक्षित रहा, तथापि उनसे संबंधित अनेक पारिभाषिक शब्द कालान्तर में विस्मृत हो गए। इस दृष्टि से पुष्पांजलि प्रकरण प्राचीन नृत्य-परम्परा तथा उसकी तकनीकी शब्दावली के संरक्षण और पुनर्स्मरण की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसके उपरान्त नृत्याध्याय का प्रारम्भ होता है, जिसमें एक सहस्र से अधिक श्लोकों के माध्यम से तत्कालीन नृत्य-परम्परा, उसकी तकनीकी संरचना, प्रस्तुति-विधान तथा विविध नृत्यांगों का विस्तृत निरूपण प्राप्त होता है।

पांडुलिपियों का विवरण एवं तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत शोध के लिए संगीत मकरंद के नृत्याध्याय की दो पूर्ण पांडुलिपियों का अध्ययन किया गया है। इनमें प्रथम प्रति तंजोर सरस्वती महल पुस्तकालय तथा द्वितीय प्रति ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, से प्राप्त हुई है। दोनों पांडुलिपियाँ पूर्ण होने के कारण पाठालोचन, पाठ-तुलना तथा समालोचनात्मक अध्ययन के लिए सुदृढ़ आधार प्रदान करती हैं। के. वासुदेव शास्त्री के अनुसार तंजोर सरस्वती महल पुस्तकालय में संगीत मकरंद की कुल चार पांडुलिपियाँ उपलब्ध थीं, जिनमें एक ताड़पत्र पांडुलिपि, दो प्राचीन कागज़ी पांडुलिपियाँ तथा एक अपेक्षाकृत नवीन कागज़ी प्रति सम्मिलित थी। उपलब्ध पांडुलिपियों में तालाध्याय एवं नृत्याध्याय सुरक्षित हैं, जबकि स्वर, राग तथा प्रबन्ध आदि पर आधारित पूर्ववर्ती अध्याय वर्तमान में उपलब्ध नहीं हैं तथा उनके अन्य पांडुलिपि-संग्रहों में उपलब्ध होने की संभावना व्यक्त की गई है।

श्री के. वासुदेव शास्त्री द्वारा पुष्पांजलि प्रकरण का संपादित एवं प्रकाशित संस्करण उपलब्ध है, जबकि नृत्याध्याय का समालोचित प्रकाशित संस्करण अभी तक उपलब्ध नहीं है। प्रस्तुत शोध में नृत्याध्याय का अध्ययन तंजोर सरस्वती महल पुस्तकालय एवं ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट से प्राप्त पांडुलिपियों के आधार पर किया गया है। यही तथ्य इस अध्ययन की मौलिकता एवं शोध-महत्त्व को भी स्थापित करता है।

संगीत मकरंद की प्रथम पांडुलिपि, जो हमें सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजोर से प्राप्त हुई है, उसमें कुल 50 पृष्ठ हैं तथा ये सभी नृत्याध्याय से संबंधित हैं। जब इसका मिलान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट से प्राप्त पांडुलिपि से किया गया, तो ज्ञात हुआ कि प्रथम पांडुलिपि में 3 पृष्ठ कम हैं। ये तीनों पृष्ठ ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट से प्राप्त पांडुलिपि में उपलब्ध हैं। इस प्रकार दोनों पांडुलिपियों के तुलनात्मक अध्ययन से नृत्याध्याय के पाठ को समझने एवं पूर्ण रूप में प्रस्तुत करने में सहायता प्राप्त होती है।

ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट से प्राप्त पांडुलिपि में कुल 85 पृष्ठ हैं। इस पांडुलिपि की अंतिम पंक्ति में लेखक ने इसके लेखन-काल का उल्लेख करते हुए लिखा है—

"श्रीशके १९४२ विकृतिनामसंवत्सरे भाद्रपद शु. षष्ठी लिखितमिदं पुस्तकम् ॥
इत्थं मातृकावल्लेखकः बालसुब्रह्मण्यशास्त्री।"

"श्रीशक १९४२, विकृति नामक संवत्सर, भाद्रपद शुक्ल षष्ठी को यह पुस्तक लिखी गई। अतः पांडुलिपि के लेखक (लिपिकार) बालसुब्रह्मण्य शास्त्री हैं।"

इस प्रकार द्वितीय पांडुलिपि में उसके लेखन-काल एवं लेखक का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है, जबकि प्रथम पांडुलिपि में इस प्रकार की तिथि-सूचना उपलब्ध नहीं है। तथापि, प्रथम पांडुलिपि की लिखावट एवं लिपि-शैली, जो वैदिक संस्कृत की प्राचीन लेखन-परम्परा से साम्य रखती हुई प्रतीत होती है, के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि सरस्वती महल लाइब्रेरी से प्राप्त प्रथम पांडुलिपि, ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट से प्राप्त द्वितीय पांडुलिपि की अपेक्षा प्राचीनतर है। यह अनुमान पांडुलिपियों के लिपि-विन्यास एवं लेखन-शैली के तुलनात्मक अवलोकन पर आधारित है और इसके निश्चित निर्धारण हेतु स्वतंत्र पांडुलिपिशास्त्रीय अध्ययन अपेक्षित होगा।

नृत्य की प्रधानता : संगीत रत्नाकर एवं संगीत मकरंद के संदर्भ में

भारतीय संगीत परंपरा में गीत, वाद्य एवं नृत्य—इन तीनों को संगीत के प्रमुख अंगों के रूप में स्वीकार किया गया है। इनके पारस्परिक संबंध के संदर्भ में संगीत रत्नाकर तथा संगीत मकरंद में भिन्न दृष्टिकोण प्राप्त होता है। संगीत रत्नाकर में कहा गया है—

"नृत्यं वाद्यानुगं प्रोक्तं वाद्यं गीतानुवर्ती च।"

अर्थात् नृत्य वाद्य का अनुगामी तथा वाद्य गीत का अनुगामी है।

इससे पृथक्, संगीत मकरंद में नृत्य को प्रधान स्थान प्रदान किया गया है। ग्रंथ में कहा गया है—

"गीतं नृत्यं तथा वाद्यं त्रयं संगीतमुच्यते।
गीतं नृत्यानुगं वाद्यं नृत्यानुगमुदीरितम्।
अतः प्रधानान्नृत्यस्य द्वयोरङ्गत्वमुच्यते॥8॥

इस श्लोक का श्री के. वासुदेव शास्त्री द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद में स्पष्ट रूप से कहा गया है:

"The subject Sangita includes within its am. it Gita, Nrtya and Vadya (vocal music, Dance with Abhinaya, and instrumental music). Vocal music accompanies Dance with Abhinaya as also instrumental music. Therefore the most important one is Nrtya which has it's adjuncts vocal and instrumental music. Veda Sūri has written this treatise under the name Sangita Makaranda."

श्री के. वासुदेव शास्त्री के इस अनुवाद से स्पष्ट होता है कि संगीत मकरंद में Nrtya को "the most important one" अर्थात् प्रधान माना गया है, जबकि vocal तथा instrumental music को उसके adjuncts के रूप में स्वीकार किया गया है। इस प्रकार संगीत रत्नाकर में जहाँ नृत्य को वाद्य का अनुगामी तथा वाद्य को गीत का अनुगामी बताया गया है, वहीं

संगीत मकरंद में इससे पृथक नृत्य को प्रधान तथा गीत एवं वाद्य को नृत्य के अनुगामी के रूप में प्रतिपादित किया गया है। इस अंतर से कालांतर में नृत्य की बढ़ती लोकप्रियता का पता चलता है।

पुष्पांजलि प्रकरण : परिचय एवं विषय-विस्तार

पंडित वेदसूरी ने पुष्पांजलि प्रकरण का आरम्भ भगवान श्री गणेश एवं माँ सरस्वती तथा अपने गुरु को प्रणाम कर कहा है कि जिन्होंने मतंग, भरत, सोढ़ल, दामोदर आदि के मतों को ध्यानपूर्वक समझा व चिंतन-मनन किया है, उन्हें प्रणाम है | ग्रंथ का आरम्भ में शुद्ध नृत्य-श्रृंखला, देशी नृत्य-श्रृंखला तथा विभिन्न नृत्य-शैलियों की भाषाओं का विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् वे पुष्पांजलि अर्थात् पुष्पों को अर्पित करने की विधि बताते हैं, जो नृत्य एवं नाट्य की शुरुआत में की जाती है।

पुष्पांजलि प्रकरण की विषयवस्तु

पुष्पांजलि का वर्णन करते हुए वेद सूरी ने रंगभूमि, प्रभु-चिह्न, 64 कलाएँ, 14 विद्याएँ, सभा, वृन्द, पात्र, नट एवं नटी, पात्र के गुण, पात्र के चिह्न, जवनिका, दिक्पाल पूजन, भूपति वंदनम्, संहत स्थानक, सुलू, सौष्ठव, द्वंशिखर, लता-हस्त, डोला, समपाद, करदेवता, चमत्कार, चच्चत्कार को आदिताल में करने की विधि, संहत, शैव एवं अन्य स्थानक, चतुरश्र आदि स्थानक पल्लव आदि हस्तों के साथ, वैष्णव स्थानक, त्रिभंग, समपाद, मत्तल्ली, केशबन्ध से दण्डहस्त तक नृत्यहस्त, गण्डसूची एवं पार्श्वजानु करण, वलित से मण्डल तक स्थानक, पताक से खटकमुख तक हस्त, मरालिका से मदालसा तक चारी, गरुड़पक्ष से ललिता तक हस्तकों के साथ, तलपुष्पपुट करण, रंगभूमि की प्रार्थना एवं पुष्पांजलि अर्पित करने की विधि का वर्णन किया है। इस प्रकार पुष्पांजलि की संपूर्ण प्रक्रिया 36 चरणों में पूर्ण होती है। इसके पश्चात् वेद सूरी प्रत्येक विषय का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए उसके प्रयोग की विधि भी स्पष्ट करते हैं।

संगीत मकरंद में वर्णित नृत्य-विधानों का कथक परंपरा के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

पंडित वेद सूरी कृत संगीत मकरंद के नृत्याध्याय में नृत्य की विभिन्न विधियों, अंग-संचालन, हस्त-मुद्राओं, ताल तथा नृत्य-बोलों का क्रमबद्ध निरूपण प्राप्त होता है। इनका अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि ग्रंथ में वर्णित अनेक नृत्य-प्रयोगों का संबंध तत्कालीन नृत्य-व्यवहार से रहा होगा और इनमें से कुछ तत्त्व आगे चलकर कथक की परंपरा में भी विभिन्न रूपों में दिखाई देते हैं। इस दृष्टि से तत्कार ,नामावली तथा ध्रुवपद नृत्य का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है ।

नामावली एवं तत्कार का प्रयोग

संगीत मकरंद के नृत्याध्याय में नामावली के अंतर्गत नृत्य की एक क्रमबद्ध प्रक्रिया का वर्णन प्राप्त होता है। वेद सूरी ने इसके लिए शरीर की स्थिति, हस्त-विन्यास तथा तत्कार के क्रम को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया है। श्लोक 163 में सम स्थान पर स्थित होकर सुलू करने की विधि बताते हुए कहा गया है—

समे स्थित्वा स्थाने यदि भवति सुलू सुललिता
करौ स्वान्ते कृत्वा रुचिरशिखरौ योगसहितौ ।
ततः पार्श्व सव्ये प्रसरति लताख्यो यदि भवेत्
करो व्यावृत्यासौ हृदि शिखरतामेति सपदि ॥163॥

इसके पश्चात् श्लोक 164 में दोनों ओर पताक, अलपद्म तथा हंसवक्त्र आदि हस्तों के प्रयोग का निर्देश मिलता है—

पुरः पार्श्वतो दक्षवामौ पताकौ यदा प्रसृतौ दक्षवामालपद्मौ ।
कृतौ हंसवक्त्रौ पुरस्तौ विधेयौ करौ चालपद्मौ हृदिस्थौ पुनस्तौ ॥164॥

अर्थात् नामावली की इस प्रक्रिया में नर्तक की देह-स्थिति के साथ विभिन्न हस्तों का क्रमबद्ध प्रयोग किया जाता है। इसके पश्चात् वेद सूरी नामावली के तत्कार के विषय में बताते हुए उसे आदिताल में करने का निर्देश देते हैं—

भवेदादितालेन तत्कारपूर्व क्रमोऽयं सदा देवनामावलीनाम् ।
विन्नेदास्तु तासांसदा संप्रयुक्तःचतुः पंचषट् खण्डकैः कोहलेन ॥165॥

इसके आधार पर नामावली का क्रम तत्कार से प्रारम्भ होता है और इसके विभिन्न भेदों का प्रयोग चतुरश्र, षट् तथा खण्ड आदि विभागों में किया जाता है। इसके पश्चात् ग्रंथ में नामावली तत्कार के बोल दिए गए हैं—

अथ तत्कारशब्दो यथा -
थै थैततततथै जगजग ताथा ।
तथा-जगजगतत्तथा ॥
-इति नामावलीतत्कारः।

कथक नृत्य की दृष्टि से नामावली का यह वर्णन विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि इसमें हस्त-विन्यास, देह की स्थिति और तत्कार—इन तीनों का एक साथ प्रयोग दिखाई देता है। प्रसिद्ध नृत्यविद् डॉ पुरु दाधीच द्वारा उनकी पुस्तक "कथक नृत्य के प्राचीन अंग" में तत्कार को कथक नृत्य की पारिभाषिक शब्दावली का एक प्रमुख अंग बताया गया है। वहाँ कहा गया है कि कथक नृत्य में ताल और लय के साथ पैरों को चलाने की क्रिया को 'तत्कार' अथवा 'तथकार' कहा जाता है। भारतीय नृत्यों में पद-संचालन की क्रिया को नींव के समान महत्त्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि मुख से गायन, हाथों से मुद्राओं द्वारा अर्थ-प्रस्तुति और चेहरे से भाव-प्रदर्शन के साथ पैरों द्वारा ताल-लय का निर्वाह किया जाता है।

षट्पदीनामावली एवं ध्रुवपद-नृत्य

संगीत मकरंद के नृत्याध्याय में नामावली के अंतर्गत षट्पदीनामावली का भी उल्लेख मिलता है। श्लोक 166 में वेद सूरी ने ध्रुवपद सहित छह पदों वाली नामावली का वर्णन किया है। इसका आरम्भ ध्रुवपद से होता है—

विश मम मानस नन्दकिशोरे ।
व्रजवनिताजनचेतनचोरे ॥ (ध्रुवपदम्)

इसके पश्चात् श्रीकृष्ण के स्वरूप, उनके विहार, आभूषण, मुखमण्डल, तिलक, मोतियों की माला, नील शरीर तथा वंशी के स्वर आदि का वर्णन करते हुए पाँच पद दिए गए हैं—

रवितनयातटमञ्जुलकुञ्जे
विहरति कुसुमचलालिसुपुञ्जे ॥विश॥ 1 ॥
कटितटघटितकनकनिभचीरे
मणिमयभूषणशोभिशरीरे ॥विश॥ 2 ॥
कुण्डलमण्डितललितकपोले
रागालपनविधानविलोले ॥विश॥ 3 ॥
कुङ्कुमतिलकविराजितमाले
गलललितामलमौक्तिकमाले ॥विश॥ 4 ॥
चन्दनचर्चितनीलशरीरे
वंशीरवकृतधीरसमीरे ॥विश॥ 5 ॥
शाहमहीपदयोदयशीले
भवभयतापहरे बहुलीले ॥166॥
इति षट्पदीनामावली।

इन पदों की विषयवस्तु से स्पष्ट होता है कि यह नामावली श्रीकृष्ण के रूप, सौन्दर्य, विहार तथा उनकी विभिन्न विशेषताओं के चित्रण पर आधारित है। इस प्रकार इसमें श्रृंगार एवं भक्ति भाव की प्रधानता दिखाई देती है। प्रसिद्ध नृत्यविद् डॉ पुरू दाधीच जी द्वारा रचित "कथक नृत्य के प्राचीन अंग" में ध्रुवपद को गीत के आधार पर किए जाने वाले नृत्य के रूप में स्पष्ट किया गया है। इसमें गीत के गाए जाने पर नर्तकी द्वारा मनोहर हाव-भाव, कान्ता एवं हास्यादि दृष्टियों, विभिन्न गतियों तथा मुखराग आदि के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति की जाती है।

ध्रुवपद-नृत्य के वर्णन में नर्तकी के सुकुमार अंग-विन्यास, दाँतों की चमक से उत्पन्न हाव, खण्डमान से रचित नृत्य तथा बीच-बीच में होने वाले कम्पन का भी उल्लेख मिलता है। इस प्रकार ध्रुवपद केवल गेय रचना न रहकर, भाव, गति, हाव-भाव तथा नृत्य-विन्यास के समन्वय से प्रस्तुत होने वाला नृत्य-प्रकार है।

इसी संदर्भ में ध्रुवपद-नर्तन को कथक की मध्यकालीन परम्परा से जोड़ा गया है और यह माना गया है कि लगभग 15वीं से 17वीं शताब्दी के मध्य ध्रुवपद नर्तन के रूप में कथक नृत्य ने एक नवीन कलेवर धारण किया और उसका प्रचार दरबारों से लेकर मंदिरों तक हुआ। ब्रज क्षेत्र में ध्रुवपद-गायन के साथ कथक नर्तकों द्वारा नृत्य करने की स्वतंत्र परम्परा तथा बाद में 'रासलीला' मंडली के गठन का उल्लेख भी मिलता है।

इस दृष्टि से संगीत मकरंद में वर्णित षट्पदीनामावली विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। इसमें ध्रुवपद को आधार बनाकर श्रीकृष्ण के रूप और लीलात्मक स्वरूप का क्रमिक वर्णन किया गया है, जो कथक की उस परम्परा से सम्बद्ध दिखाई देता है जिसमें गीत के भावों को नृत्य, हाव-भाव और मुखाभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। अतः षट्पदीनामावली को संगीत मकरंद में वर्णित गीत, भाव और नृत्य के समन्वित स्वरूप के एक उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

उपलब्ध स्रोतों, पांडुलिपियों तथा के. वासुदेव शास्त्री द्वारा किए गए संपादन एवं अनुवाद के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पंडित वेद सूरी कृत संगीत मकरंद नारद कृत संगीत मकरंद से भिन्न एवं स्वतंत्र ग्रंथ है। मंगेश रामकृष्ण तैलंग द्वारा संपादित Sangīta-Makaranda of Nārada में भी वेद कृत संगीत मकरंद का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है, जो इसके स्वतंत्र ग्रंथ के रूप में अस्तित्व की पुष्टि करता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि वेद सूरी शाहजी महाराज के दरबार से संबद्ध नाट्याचार्य थे तथा संगीत मकरंद की रचना शम्भु के नृत्य-प्रशिक्षण के उद्देश्य से की गई थी। ग्रंथ की क्रमबद्ध प्रस्तुति-पद्धति, तकनीकी संज्ञाओं की तत्काल व्याख्या तथा नृत्य के व्यावहारिक पक्ष पर दिया गया विशेष ध्यान इसे नृत्य-अध्ययन की दृष्टि से विशिष्ट बनाता है।

संगीत मकरंद के पुष्पांजलि प्रकरण के 388 श्लोक तथा उसके पश्चात् प्रारम्भ होने वाला विस्तृत नृत्याध्याय तत्कालीन नृत्य-परम्परा के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करते हैं। विशेष रूप से नृत्याध्याय की पूर्ण पांडुलिपियों का उपलब्ध होना और उसका समालोचित प्रकाशित संस्करण अभी तक उपलब्ध न होना इस अध्ययन के महत्त्व को और बढ़ाता है। तंजावूर सरस्वती महल लाइब्रेरी तथा ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट से प्राप्त पांडुलिपियों के तुलनात्मक अध्ययन से पाठ की संरचना एवं उसकी विषयवस्तु को समझने में महत्वपूर्ण आधार प्राप्त होता है।

इस प्रकार, पंडित वेद सूरी का संगीत मकरंद भारतीय नृत्यशास्त्रीय परम्परा के अध्ययन की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण एवं स्वतंत्र स्रोत है। विशेषतः इसके नृत्याध्याय में उपलब्ध नृत्य-विषयक सामग्री तत्कालीन नृत्य-परम्परा के स्वरूप, तकनीकी संज्ञाओं तथा प्रयोग-विधियों को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन इसी अप्रकाशित नृत्य-सामग्री के समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से भारतीय नृत्य, विशेषतः कथक की परम्परा के अध्ययन में एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

आगामी शोध की दिशा

प्रस्तुत अध्ययन पंडित वेद सूरी कृत संगीत मकरंद के नृत्याध्याय के विस्तृत एवं व्यापक अध्ययन की दिशा में एक प्रारम्भिक प्रयास है। नृत्याध्याय का विस्तृत समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत शोधार्थी के पी.एच.डी. शोध का विषय भी है, जिसके अंतर्गत इस ग्रंथ की नृत्य-विषयक सामग्री, तकनीकी संज्ञाओं, नृत्य-विधानों तथा विशेषतः कथक नृत्य के परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता का विस्तृत अध्ययन किया जा रहा है। वर्तमान शोध-पत्र में प्रस्तुत निष्कर्ष इसी व्यापक शोध-अध्ययन की आधारभूमि निर्मित करते हैं। इस विषय से संबंधित विस्तृत अध्ययन एवं अन्य शोध-पत्रों के माध्यम से संगीत मकरंद के नृत्याध्याय के विभिन्न पक्षों को क्रमशः प्रस्तुत किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ एवं स्रोत

1. वेद सूरी, पं. संगीत मकरंद — हस्तलिखित पांडुलिपि, ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, तिरुपति।
2. वेद सूरी, पं. संगीत मकरंद — हस्तलिखित पांडुलिपि, सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजौर।
3. शास्त्री, के. वासुदेव। "Nritya Pushpanjali." The Journal of the Tanjore Maharaja Serfoji's Saraswathi Mahal Library, Vol. X, Nos. 1–3, 1955–1956.
4. सूरी, वेद। Nritya Pushpanjali of Veda Suri. Edited and translated by Sri K. Vasudeva Sastri, B.A., Research Professor (Retd.), Saraswathi Mahal, Tanjore. Darpana Publication, 1965.
5. तैलंग, मंगेश रामकृष्ण। Sangīta-Makaranda of Nārada. Edited with Introduction and Appendices. Central Library, Baroda, 1920.
6. दाधीच, पु. एवं दाधीच, वि. (2009). नृत्य निबंध. इन्दौर: बिन्दु प्रकाशन।
7. दधीच, डॉ. पुरु. कथक नृत्य के प्राचीन अंग. बिंदु प्रकाशन।